लगोटी पहने व्यज़्ति के किस्से सुनाए जाते हैं। भारत में राजा के किस्से सुनाए जाते हैं, लेकिन उस प्रजापालक राम के जिसने पिता का वचन निभाने के लिए चलकर आए राज्य को छोड़कर जंगल चला गया था। भारत में धनवान के किस्से भी सुनाए जाते हैं, लेकिन उस धनवान के जिसने अपने जीवन की कमाई हुई पूंजी को आजादी की लड़ाई के लिए महाराणा प्रताप को दे दिया था। हमारे यहां विकास तब माना गया है, जब सबका विकास एक साथ हो। धन बढ़ना केवल विकास नहीं है, बल्कि नैतिकता बढ़ना विकास है। हमारे यहां धन का महत्व दान से है और शज़्ति का महत्व सज्जनों की रक्षा से है। हमारी विकास की अपनी कल्पना है। लेकिन उसका कहीं प्रयोग नहीं हुआ। ज़्योंकि उस पर प्रयोग करने को कोई तैयार नहीं हुआ। इसका एक कारण विश्वास की कमी का रहा है। विश्वास था तो साहस नहीं था। इसलिए विकास का ऐसा ढर्रा अपनाया गया जिसमें सारा कुछ सरकार नामक एजेंसी पर डाल दिया गया। सरकार का अपना कर्तव्य है। उसकी नीतियां परिणामकारी होती हैं। परन्तु उस सरकार को बनाने वाला तो समाज ही होता है। इसलिए विकास की ऐसी योजना बननी चाहिए, जिसमें समाज विकसित हो सके। समाज जागकर अपना विकास खुद कर लेता है, उसे केवल सहयोग की जरूरत पड़ती है। बाकी जगह ज़्या होता है पता नहीं, लेकिन अपने यहां तो ऐसा होता है कि द्रोपदी का चीरहरण होता रहता है। भगवान श्रीकृष्ण द्वारका में

होते हैं, उन्हें आभास होता है कि कुछ गड़बड़ हो रही है। वह चाहते तो भृकुटी तान देते तो सारे कौरव नष्ट हो जाते , लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया, बल्कि द्रोपदी को वस्त्र देकर इज्जत बचायी। वह सामने तब तक नहीं आए, जब तक पांडव धर्म के लिए शज़ उठाकर लड़ने को तैयार नहीं हुए। धर्म युद्ध में भी भगवान ने केवल रथ चलाया, लड़ना पांडवों को पड़ा। मतलब, जिसकी लड़ाई होती है, उसे खुद लड़नी पड़ती है। भगवान भी तब सहायक होते हैं, जब अपनी लड़ाई खुद लड़ी जाय। चित्रकूट में नानाजी ने भी वही किया। ग्राम समितियां बनाई। ग्रामीणों को योजनाओं का ज्ञान देना शुरू किया। विवादमुज़्त, साक्षर गांव बनाने के साथ समाज को जगाने का काम किया। लोग कहते हैं कि हम समाज का काम करते हैं। वह समाज पर कोई उपकार नहीं कर रहे। हम ही समाज हैं,